बिहार राज्य के कृषकों का श्रीअन्न उत्पादन विषयक प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। प्रसार निदेशालय, शुआट्स प्रयागराज जनपद मधेपुरा, बिहार राज्य के सयमित 40 कृषकों का शब्द मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजनान्तर्गत पाच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन दिनांक 08-09-2024 को प्रसार निदेशालय मे सम्पन्न हुआ। समापन अवसर पर कार्यकम की अध्यक्षता करते हुए निदेशक प्रसार डा0 प्रवीन चरन ने कृषकों को श्रीअन्न उत्पादन एवं उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि श्री अन्न की खेती कम पानी उपलब्ध होने पर भी सफलतापूर्वक की जा सकती हैं। इसमे रोग एवं कीडों के लगने की संभावना भी अत्यन्त कम होती है साथ ही इसमे अधिक निवेश की आवश्यकता नही होती है। उन्होने कहा कि ज्यादातर किसान श्रीअन्न की खेती मे कवल ज्वार एवं बाजरा का उत्पादन करते है लेकिन अन्य फसले जैसे कोदों, रायी, कंगनी, सावां आदि श्रीअन्न फसलों की खेती परभी कृषकों को अपना ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। उन्होनें बताया कि रागी कैल्शियम तत्व से परिपूर्ण होती है जिसके सेवन से हड्डी संबधित विकारों का निराकरण किया जा सकता है जबकि कंगनी कैंसररोधी खाद्य पदार्थ के रुप मे प्रचलित है इस प्रकार सावां में पावन रेशों की मात्रा अधिक होती है जिससे पेट संबंधित विकारों का निदान किया जा सकता है। उन्होने आगे कहा कि सरकार की श्रीअन्न फसलों के प्रोत्साहन सम्बन्धित योजनायें चल रही है जिसका लाभ कृषकों को अवश्य लेना चाहिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर मुख्य अतिक्षि के रुप मे सहभागिता कर रही विश्वविद्यालय की निदेशक विकास डा0 रीतू प्रकाश दूबे ने कृषको के सम्क्ष श्रीअन्न की महत्त पर चर्चा करते हुए कहा कि श्रीअन्न चमत्कारी धान्य के रुप मे स्वीकार किया जाता है। लोगो मे खान-पान की आदतों मे परिवर्तन, व्यंजन बनाने मे असुविधा आदि के कारण भारत मे इनका प्रयोग कम हो रहा है। श्रीअन्न के अनुप्रयोग हेतु जागरुकता अभियानों स्वास्थ्य के प्रति सचेत होते उपभोक्ओं शहरों मे पौष्कि खाद्य की माग तथा इनासे मूल्य-वर्धित उत्पाद बनाने हेतु प्रौद्योगिकियों की आपूर्ति के द्वारा इनकी मांग को बढाया जा सकता है। प्रसार निदेशालय के संयुक्त निदेशक डा0 ए0के0 चौरसिया ने शुआट्स विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेंहूँ की प्रजातियां ए.ए.आई.डब्लू-6 ए.ए.आई.डब्लू-ए.ए.आई डब्लू-10 ए.ए.आई.डब्लू-13 प्रजातियों की विशेषता से अवगत कराया तथा गेहूँ के बीज उत्पादन एवं प्रबंधन की जानेकारी प्रदान की। प्रसार निदेशालय के समन्वयक डा0 अरुण कुमार यादव ने प्राकृतिक खेती पर चर्चा करते हुए कहा कि कम लागत प्राकृतिक खेती के सिद्धान्तों के अनुसार जीवामृत एवं घनजीवामृत प्रकार की खाद तैयार की जाती है तथा इस पद्धति से एक देशी गाय से तीस एकड की भूमि में खेती की जा सकती है। उन्होने कहा कि प्राकृतिक खेती द्वारा न सिर्फ लागत मे कमी आती है अपितु गुणवात्तायुक्त फसल उत्पाद भी प्राप्त होता है। इस अवसर पर प्रसार निदेशालय की महिला उत्प्रेरक श्रीमती मीना नेथन ने उपस्थित कृषकों को श्रीअन्न की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक जानकारी प्रदान करते हुए कृषकों से रागी के उत्पाद जैसे लड्डू और हलुवा गृह एवं व्यवसायिक स्तर पर तैयार करने की जानकारी प्रदान की तथा प्रशिक्षणार्थी कृषकों नें अपने हाथों से इन उत्पादों को तैयार करने का प्रयोगात्मक प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षण समन्वयक डा0 मनीष कुमार केसरवानी ने तकनीकी श्रीअन्न प्रसंस्कृत उत्पाद तैयार कर उसके विपणन की तकनीकी जानकारी प्रदान की और कहा कि सरकार द्वारा चलायी गयी पी.एम.एफ.ई. योजना के अन्तर्गत प्रसंस्कृत उत्पादों की इकाई कृषकों द्वारा लगाने पर मशीनरी खरीदने पर 36 प्रतिशत का अनुदान अनुमन्य है जिससे कृषक उद्यमशीलता द्वारा अर्थिक रुप से उन्नत हो सकते है। प्रशिक्षण कार्यकम के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि निदेशक डा0 रीतू प्रकाश दूबे निदेशक प्रसार ने प्रशिक्षण मे प्रतिभागी कृषकों को प्रमाण-पत्र एवं प्रशिक्षण साहित्य का वितरण किया। उन्होने कृषकों को पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यकम मे प्रतिभाग करने के लिए बधाई दी व उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर डा0 मदन सेन सिंह, श्रीमती मीना नेथन आदि वैज्ञानिक उपस्थित थे। अंत मे प्रशिक्षण समन्वयक डा0 मनीष कुमार केसरवानी के द्वारा मुख्य अतिथि एवं कृषकों को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यकम का समापन किया गया।